

* पुनरावर्तन - २ *

१. शाक (पत्तोंवाली) और सब्जियों के पाँच-पाँच नाम सुनो और सुनाओ ।
२. एक महीने की दिनदर्शिका बनाओ और विशेष दिन बताओ ।
३. १ से १०० तक की संख्याओं का मुखर वाचन करो ।
४. अपना परिचय देते हुए परिवार के बारे में दस वाक्य लिखो ।
५. अक्षर समूह में से वैज्ञानिकों के उचित नाम बताओ और लिखो :

मी	भा	हो	भा								
नी	से	ज	भि	र							
मं	बं	जू	स	ल							
स्क	रा	र्य	भा	चा							
जे.	क	म	ला	ए.	पी.						
जा	अ	न	म्म	की	ल						
ना	व	क	ला	चा	ल्प						

कृति/उपक्रम

अपने बारे में
भाई/बहन
से सुनो ।

इस वर्ष तुम
कौन-सा विशेष कार्य
करोगे, बताओ ।

सप्ताह में एक दिन
कहानियाँ
पढ़ो ।

पढ़ी हुई सामग्री की
विश्लेषणात्मक
प्रस्तुति करो ।

दो शब्द

यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान को दृष्टि में रखते हुए भाषा के नवीन एवं व्यावहारिक प्रयोगों तथा विविध मनोरंजक विषयों के साथ आपके सम्मुख प्रस्तुत है। पाठ्यपुस्तक को स्तरीय (ग्रेडेड) बनाने हेतु दो भागों में विभाजित करते हुए उसका 'सरल से कठिन की ओर' क्रम रखा गया है। यहाँ विद्यार्थियों के पूर्व अनुभव, घर-परिवार, परिसर को आधार बनाकर श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन के भाषाई मूल कौशलों के साथ भाषा अध्ययन और अध्ययन कौशल पर विशेष बल दिया गया है। इसमें स्वयं अध्ययन एवं चर्चा को प्रेरित करने वाली रंजक, आकर्षक, सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है।

पाठ्यपुस्तक में आए शब्दों और वाक्यों की रचना हिंदी की व्यावहारिकता को ध्यान में रखकर की गई है। इसमें क्रमिक एवं श्रेणीबद्ध कौशलाधिष्ठित अध्ययन सामग्री, अध्यापन संकेत, अभ्यास और उपक्रम भी दिए गए हैं। विद्यार्थियों के लिए लयात्मक कविता, बालगीत, कहानी, संवाद, पत्र आदि विषयों का समावेश है। स्वयं की अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता के साथ-साथ वैविध्यपूर्ण स्वाध्याय के रूप में 'जरा सोचो....', 'खोजबीन', 'मैंने क्या समझा', 'अध्ययन कौशल' आदि कार्यात्मक कृतियाँ भी दी गई हैं। सृजनशील गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले अभ्यास 'मेरी कलम से' 'वाचन जगत से', 'बताओ तो सही', 'सुनो तो जरा', 'स्वयं अध्ययन' तथा 'विचार मंथन' आदि का समावेश किया गया है। इन कृतियों में एक दृष्टिकोण रखने का प्रयास किया है जिसे समझकर विद्यार्थियों तक पहुँचाना और उनसे करवाना है।

शिक्षकों एवं अभिभावकों से यह अपेक्षा है कि अध्ययन-अनुभव देने से पहले पाठ्यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेत एवं दिशा निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें। सभी कृतियों का विद्यार्थियों से अभ्यास करवाएँ। स्वाध्याय में दिए गए निर्देशों के अनुसार पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराते हुए उचित मार्गदर्शन करें तथा आवश्यक गतिविधियाँ स्वयं करवाएँ। व्याकरण (भाषा अध्ययन) को समझने हेतु 'भाषा की ओर'के अंतर्गत चित्रों तथा भाषाई खेलों को दिया गया है ताकि पुनरावर्तन और नए व्याकरण का ज्ञान हो। पारंपरिक पद्धति से व्याकरण पढ़ाना अपेक्षित नहीं है।

आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का समावेश करें। शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक के माध्यम से जीवन मूल्यों, जीवन कौशलों, मूलभूत तत्त्वों के विकास का अवसर विद्यार्थियों को प्रदान करें। पाठ्यसामग्री का मूल्यांकन निरंतर होने वाली प्रक्रिया है इससे विद्यार्थी परीक्षा के तनाव से मुक्त रहेंगे। पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं-श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन, भाषा अध्ययन (व्याकरण) और अध्ययन कौशल का सतत मूल्यांकन अपेक्षित है।

विश्वास है कि आप सब अध्ययन-अध्यापन में पाठ्यपुस्तक का उपयोग कुशलतापूर्वक करेंगे और हिंदी विषय के प्रति विद्यार्थियों में अभिरुचि और आत्मीयता की भावना जागृत करते हुए उनके सर्वांगीण विकास में सहयोग देंगे।